B.Ed. 2nd Year **Dr. Amod Kumar Sinha**
Session – 2018-2020 (Assistant Professor)
Subject – Pedagogy of History **Department of Education**
Course – 7 (B) /Unit – 2(d) **A.N.D.College,**
Topic – वर्तमान इतिहास-पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव Shahpur Patory
Suggestions for imrovement in Present History-Curriculum Samastipur
Lecture No. - 52

किसी विषय के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में पाठ्यक्रम का बहुत बड़ा योगदान होता है। एक सफल एवं प्रभावी पाठ्यक्रम पूरी तरह संतुलित तथा निर्धारित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। इसमें ज्ञानात्मक , क्रियात्मक एवं भावात्मक तीनों पक्षों का यथोचित स्थान होता है। एक उत्तम पाठ्यक्रम छात्रों में वांछित गुणों के विकास में एक सुदृढ़ आधार एवं प्रेरणादायक स्रोत की भूमिका निभाता है। यह छात्रों में मौलिकता के साथ-साथ उनमें रचनात्मकता का भी सृजन करता है।

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के वर्तमान इतिहास-पाठ्यक्रम में सुधार हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं -

1. **विषय-सामग्री** - सैद्धांतिक रूप से पाठ्यक्रम में शामिल विषय-सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो छात्र को एक सफल जीवन जीने की प्रेरणा दे। उसे ऐसा व्यावहारिक ज्ञान दे, जिससे वह जीवन की समस्याओं का विवेकपूर्ण ढ़ंग से हल करने में समर्थ हो। साथ ही पाठ्यक्रम में अपने राष्ट्र की श्रेष्ठ परिस्थितियों , रीति-रिवाज, परंपराओं, मान्यताओं आदि को भी यथोचित स्थान मिलना चाहिए।

2. **क्रियात्मक पक्ष पर बल दिया जाए** ‘ वर्तमान पाठ्यक्रम की क्रियात्मकता प्रायः शून्य ही है। इसमें संबंधित अध्यायों का पठन -पाठन कक्षा-कक्ष तक ही सीमित होकर रह गया है। इससे छात्रों के व्यावहारिक पक्ष का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। छात्रों को सामाजिक क्रियाओं एवं गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें ऐतिहासिक स्थलों, बहुमुखी नदी योजनाओं, कृषि-फार्म, बैंक, फैक्ट्रियों, ग्रामीण क्षेत्रों आदि पर ले जाना चाहिए तथा उन्हें अपने अनुभव पर आधारित रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इससे छात्र विषय-वस्तु को सहज ढंग से ग्रहण कर सकेंगे एवं उनके व्यावहारिक पक्ष का भी पूर्ण विकास हो सकेगा।

3. **इसे कम बोझिल बनाया जाए** - कक्ष 9 एवं 10 की इतिहास के पाठ्यक्रम में कुल 16 अध्याय हैं। इनमें प्रथम चार अध्यायों में विश्व की विभिन्न सभ्यताओं का विस्तृत एव बहुआयामी वर्णन है। इसे सीमित किए जाने की आवश्यकता है , क्योंकि इनमें अत्यधिक समरूपता है। इन्हें ग्रहण करने में छात्र व्यग्रता महसूस करते है। विषय - वस्तु को सीमित करने हेतु सभ्यताओं का अध्ययन किसी नवीन अवधारणा के अनुसार होना चाहिए।

4. **अधिक व्यापक बनाया जाए** - पाठ्यक्रम का बोझ कम करने के साथ ही इसे अधिक व्यापक बनाने की भी आवश्यकता है। वर्तमान पाठ्यक्रम में कुछ ज्वलंत ऐतिहासिक समस्याओं को शामिल नहीं किया गया है। इससे इसकी अपूर्णता कि आभास होता है।

5. **परीक्षण विधि में सुधार हो** - इतिहास पाठ्यक्रम में छात्रों का मूल्यांकन का आधार केवल लिखित परीक्षा नहीं बल्कि सत्र के दौरान कक्षा -कक्ष के बाहर किए गए कार्य, जैसे - ऐतिहासिक स्थलों एवं संग्रहालय का भ्रमण, सहभागिता, अवलोकन आदि, के आधार पर भी होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा।

6. **मौखिक लेखन एवं चिंतन को प्रोत्साहन मिले** - परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्र पुस्तकों एवं मार्गदर्शिकाओं का सहारा लेते हैं एवं प्रश्नों के उत्तर उसी तर्ज पर याद करते हैं। इससे उनमें मौलिक चिंतन एवं लेखन की योग्यता का विकास नहीं हो पाता है। इसकी कमी उसे उच्च शिक्षा में अक्सर खलती है। इस कमी को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम में कुछ कार्य परियोजनाओं , जैसे - ऐतिहासिक विषय सामग्री की पेपर कटिंग या संकलन , प्रोजेक्ट कार्य आदि , का समावेश किया जाना चाहिए।

7. **ज्ञान की निरंतरता हो** - पाठ्यक्रम निर्माण में अक्सर यह दोष पाया जाता है कि पिछली कक्षा के अंतिम ज्ञान के स्तर को अगली कक्षा के ज्ञान स्तर से भली -भांति जोड़ा नहीं जाता है। इससे छात्रों को पदोन्नति के पश्चात विषय ज्ञान की प्रथम सीढ़ी पर शून्य का आभास होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि इतिहास-पाठ्यक्रम को भी कक्षा 6 से कक्षा 10 तक तर्कसंगत आधार पर विभक्त किया जाए ताकि छात्र कक्षा की पदोन्नति होने पर ज्ञान की निरंतरता का अनुभव कर सकें।

समाप्त